International Journal of History 2021; 3(2): 129-131

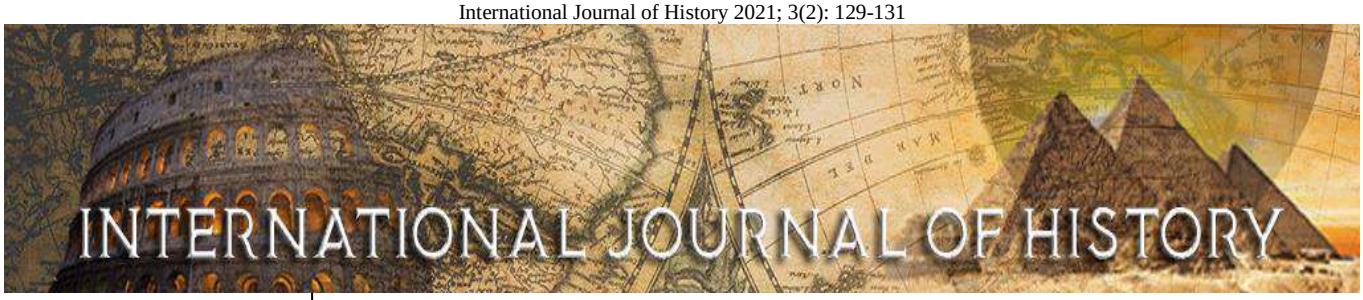

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2021; 3(2): 129-131
Received: 28-07-2021
Accepted: 29-09-2021

अशोक कुमार 'अमर'
ग्राम– दिवारी, पो.– कबरिया, थाना– सदर, जिला– दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अशोक कुमार 'अमर'
ग्राम– दिवारी, पो.– कबरिया, थाना– सदर, जिला– दरभंगा, बिहार, भारत

बिहार के सामाजिक आन्दोलन और रामवृक्ष बेनीपुरी

अशोक कुमार 'अमर'

सारांश
बेनीपुरीजी लेखक होने के साथ–साथ स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, किसान मजदूरों के हमदर्द, समाजवादी कार्यकर्ता, जुझारू पत्रकार एक साथ थे। बेनीपुरी जी ने कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, जीवनी, संस्मरण, राजनीतिक निबन्ध, बाल साहित्य, शब्दचित्र, कविता आदि विधाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा है। सैकड़ों पृष्ठों में उनकी डायरियां भी फैली हैं। इनमें उनके निजी, आंतरिक व्यक्तित्व और उनके समय का नया परिचय मिलता हैं। उन्होंने अनुवाद भी किए, जिनमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा अंग्रजी के कुछ रोमांटिक कवियों की कविताओं के अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बेनीपुरी का यह सारा साहित्य बीसवीं सदी में एक नया भारतीय समाज बनाने की कोशिश का हिस्सा है।

मुख्य शब्द– सामाजिक, आन्दोलन, रामवृक्ष, बेनीपुरी

प्रस्तावना
श्री रामवृक्ष बेनीपुरीजी का जन्म 23 दिसंबर 1899 ई० में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के कटरा थानान्तर्गत बेनीपुर गांव में हुआ था। आपके पिता श्री फूलचंद्र सिंह तथा पितामह श्री यदुनंदन सिंह थे। "बचपन में ही आपके माता–पिता का निधन हो गया। इसलिये इनका पालन–पोषण ननिहाल में हुआ। जहां तक शिक्षा का प्रश्न है अक्षरारंभ तो गांव की पाठशाला में ही हो गया था किंतु प्राथमिक शिक्षा विधिवत् ननिहाल के गांव वंशीपचरा में हुई। इसके बाद वे अपने बहनोई के पास मुजफ्फरपुर चले आये और यहीं भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल में नाम लिखाया। आठवीं कक्षा में पढ़ते समय इन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की 'विशारद' परीक्षा में (भी) उत्तीर्ण की। तब आपकी उम्र पन्द्रह वर्ष थी। विभिन्न स्कूलों में अध्यापन करते हुए जब मैट्रिक में पहुंचे थे, देश में अहसयोग आंदोलन चल रहा था। गांधी जी के प्रभाव के कारण 1920 में स्कूली शिक्षा का परित्याग कर दिया। बेनीपुरी जी की साहित्य में रूचि तुलसी के रामचरितमानस के पठन–पाठन से हुई। रामचरितमानस से प्रभावित होकर कविता करने लगे। आपकी प्रथम रचना सन् 1916 ई० में कानपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'प्रताप' में प्रकाशित हुई। उसके संपादक महान देशभक्त क्रांतिकारी श्री गणेश शंकर विद्यार्थी थे।
बेनीपुरी जी की पत्रिकारिता भी सामाजिक संघर्षों का ही प्रतिबिंब है। उन्होंने एक निश्चित उद्देश्य को लेकर मिशन भाव से पत्रकारिता की। 1947 से पहले उन्होंने अपनी पत्रकारिता से स्वाधीनता आंदोलन को गति दी। देश में समाजवाद लाने का रास्ता बनाया। स्वाधीनता के बाद उन्होंने पत्रकारिता द्वारा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और सांस्कृतिक उत्थान के प्रयास किए। हिन्दी की लड़ाई लड़ी। अपने पत्रकार जीवन के 37 वर्षों में उन्होंने तरूण भारत, किसान मित्र, गोलमाल, बालक, युवक, कैदी, लोक संग्रह, योगी, जनता तूफान, हिमालय, जनवाणी, चुन्नू–मुन्नू तथा नई धारा का संपादन किया बेनीपुरीजी अन्याय के विरूद्ध लिखने वाले निर्भीक पत्रकार थे। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अपने संपादकीय में व्यक्त विचारों के लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा था।
एक राजनीतिकर्मी की हैसियत से स्वाधीनता आंदोलन में वे अनेक बार जेल गए। उन्होंने लगभग नौ साल जेल से गुजारे। उनकी राजनीति समाजवाद की राजनीति थी। कांग्रेस में रहते हुए सोशलिस्ट पार्टी बनाने का स्वप्न सबसे पहले बेनीपुरीजी ने चौथे दशक के पूर्वार्द्ध में देखा। उसके अनेक वर्षों बाद कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनी जिसका नेतृत्व जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने किया। बिहार के विपक्ष केन्द्रित राजनीतिक मानस के निर्माण में बेनीपुरीजी और उनके साथियों का ऐतिहासिक योगदान है। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयप्रकाश नारायण जेल से फरार हो गए थे। इस साहसिक कार्य को संभव कराने वाले लोगों में बेनीपुरीजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। स्वाधीनता के बाद वे प्रजा समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेताओं में रहे। 1957 में बिहार विधान सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए थे।
सामाजिक परिवर्तन के लिए अपने समय के आंदोलनों में शिरकत की अपने व्यक्तित्व के इन गुणों के

कारण वे बीसवीं सदी के महानायकों में शामिल किए जा सकते हैं। इस सदी के एक महानायक बेनीपुरी का लेखन न सिर्फ अपने समय का जीवंत दस्तावेज है बल्कि भविष्य के लिए भी उसमें बहुमूल्य पाथेय है। समाज के दबे–कुचले लोगों के जीवन की वास्तविकताओं का उद्घाटन उनके लेखन का लक्ष्य था। इसमें वे पूरी तरह सफल हुए। समाज की वास्तविकताओं को उन्होंने सर्वथा नई शैली में अपनी रचनाओं के अंतर्गत प्रस्तुत किया। मूल मानवीय भावनाओं को उन्होंने ऐंद्रिकता और कलात्मकता के साथ अपनी रचनाओं में अमर कर दिया है। अपनी पूरी रचनाशीलता में वे कहीं व्यक्तिवादी नहीं हैं। समाज का यथार्थ हमेशा उसकी पृष्ठभूमि में होता है। उनकी रचनाओं का यही गुण उन्हें कालजयी बनाता है। अपने कालजयी गुणों के कारण बेनीपुरी की रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं। समानता और सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष करने वाली शक्तियों को उनकी रचनाएं ताकत देती हैं।

बेनीपुरी जी राष्ट्रीय आंदोलन मे दस बार जेल गए। पहली बार 1930 में उन्हें छह महीने की सजा हुई और हजारी बाग जेल में बंद रहे। 1932 में डेढ़ वर्ष की सजा हुई, हजारीबाग और पटना कैंप जेल में रहे। 1937 में उन्होंने तीन महीने की सजा पाई और हजारी बाग जेल में बंद रहे। 1938 में दो दिन हिरासत में सिटी जेल पटना में रहे।

1939 में दो सप्ताह की सजा पटना जेल में काटी। 1940 में हजारीबाग जेल में एक वर्ष की सजा के तहत रहे। इसी वर्ष एक मुकद्दे के सिलसिले में छपरा जेल और सीवान जेल में रहे। 1941 में छह महीने की सजा हजारीबाग जेल और मुजफ्फरपुर जेल में काटी। 1942 में डेढ़ साल की सजा हुई और सीतामढ़ी जेल में रहे। 1941 में ही छह महीने की सजा हुई और मधुबनी जेल, दरभंगा जेल गए। 1942 से कम तक नजरबंद हुए और हजारीबाग और गया जेल में रहे।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने कई सस्थाओं की स्थापना में सहयोग दिया। 1919 में बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। इसके वे सहकारी मंत्री व संयुक्त मंत्री रहे। 1946 से 50 तक इस संस्था के प्रधानमंत्री रहे। 1951 में सभापति बने। 1929 में वह अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रचार मन्त्री बने, उस समय गणेश शंकर विद्यार्थी उसके सभापति थे। 1920 से 46 तक वह कांग्रेस में विभिन्न पदों पर रहे। पटना शहर कांग्रेस कमेटी के सभापति, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। 1926 में बेनीपुरी जी ने बिहार राजनीतिक कांफ्रेस (मुंगेर) में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पेश किया, जो बड़े नेताओं के विरोध के बावजूद पास हुआ। उन्होंने फैज कांग्रेस में जमींदारी उन्मूलन का प्रस्ताव पेश किया। 1937 के आमचुनाव के बाद दिल्ली में संयोजित नेशनल कांवेंशन के सदस्य बने।

1931 में गठित बिहार सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से एक बेनीपुरी जी भी थे। अखिल भारतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की पहली कार्यसमिति के सदस्य बने। सोशलिस्ट (बिहार) के पार्लियामेंटरी बोर्ड के अध्यक्ष रहे। पार्टी के मुख पत्र 'जनता' के संपादक रहे। बिहार प्रांतीय किसान सभा के सभापति बने। भारतीय किसान सभा के उप सभापति रहे। उन्होंने जमींदारी उन्मूलन का नारा सबसे पहले दिया।

1957 में वह बिहार प्रजा समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में भारी बहुमत से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1958 में बिहार विश्वविद्यालय सिंडिकेट के सदस्य बने। 1959 में उन्होंने बागमती कालेज और गांधी भूमि की स्थापना के लिए जोरदार प्रयत्न किए। उन्होंने छठे दशक के शुरू में सोवियत संघ, तुर्की, इराक, सीरिया, वर्मा थाईलैंड, चीन तथा विभिन्न यूरोपीय देशों की यात्रायें कीं।

दिसंबर 1959 में जब राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद गांधी भूमि के उद्घाटन के लिए आ रहे थे, इसकी तैयारी में बेनीपुरी जी ने बहुत परिश्रम किया था। राष्ट्रपति के आने के एक दिन पूर्व संध्या में अचानक उन्हें पक्षाघात का आक्रमण हुआ। बाद में उन्हें तीन–चार आक्रमण और हुए।

बेनीपुरी जी को कई सम्मान मिले। 1967 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने उन्हें साहित्य वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया। जनवरी 1968 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा वयोवृद्ध साहित्यिक पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी 7 सितंबर 1968 को प्रातः छह बजे इस दुनिया से कूच कर गए।

बेनीपुरीजी की पत्रिकारिता भी सामाजिक संघर्षों का ही प्रतिबिंब है। उन्होंने एक निश्चित उद्देश्य को लेकर मिशन भाव से पत्रकारिता की । 1947 से पहले उन्होंने अपनी पत्रकारिता से स्वाधीनता आंदोलन को गति दी। देश में समाजवाद लाने का रास्ता बनाया। स्वाधीनता के बाद उन्होंने पत्रकारिता द्वारा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और सांस्कृतिक उत्थान के प्रयास किए। हिंदी की लड़ाई लड़ी। अपने पत्रकार जीवन के 37 वर्षों में उन्होंने तरूण भारत, किसान मित्र, गोलमाल, बालक, युवक, कैदी, लोक संग्रह, योगी, जनता, तूफान, हिमालय, जनवाणी, चुन्नू–मुन्नू तथा नई धारा का संपादन किया। बेनीपुरीजी अन्याय के विरुद्ध लिखने वाले निर्भीक पत्रकार थे। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अपने संपादकीय में व्यक्त विचारों के लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा था। एक राजनीतिकर्मी की हैसियत से स्वाधीनता आंदोलन में वे अनेक बार जेल गए। उन्होंने लगभग नौ साल जेल में गुजारे। उनकी राजनीति समाजवाद की राजनीति थी। कांग्रेस में रहते हुए सोशलिस्ट पार्टी बनाने का स्वप्न सबसे पहले बेनीपुरीजी ने चौथे दशक के पूर्वार्द्ध में देखा। उसके अनेक वर्षों बाद कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनी जिसका नेतृत्व जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने किया। बिहार के विपक्ष केन्द्रित राजनीतिक मानस के निर्माण में बेनीपुरीजी और उनके साथियों का ऐतिहासिक योगदान है। 1942 के भारत छोडो आंदोलन के दौरान जयप्रकाश नारायण जेल से फरार हो गए थे। इस साहसिक कार्य को संभव कराने वाले लोगों में बेनीपुरीजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। स्वाधीनता के बाद वे प्रजा समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेताओं में रहे। 1957 में बिहार विधान सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए थे। रामवृक्ष बेनीपुरी उन हिन्दी साहित्यकारों में थे जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। जयप्रकाश नारायण के साथ उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की थी।

बेनीपुरी की रचानाएं स्वाधीनता आंदोलन के ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। उन्होंने इस आंदोलन को भीतर से देखा था। किसी राजनीतिज्ञ के लेखन में स्वाधीनता आंदोलन के अन्तर्विरोधों का ऐसा सजीव चित्रण नहीं मिलता जैसा बेनीपुरी की रचानाओं में मिलता है।

बेनीपुरीजी ने नाटक, उपन्यास, कहानियां, निबन्ध, आत्मकथात्म आलेख, यात्रा साहित्य, जीवनी ,संस्मरण, रेखाचित्र, राजनीतिक लेख, बाल साहित्य, डायरी, आदि बहुत–सी विधाओं में प्रयोग किये हैं।

स्वतन्त्रता पूर्व राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप क्या था और उसकी अवधारणायें कौन–कौन सी थीं, इसका विवेचन बेनीपुरी ने अपने सहित्य में किया है। भारत राष्ट्र था या नहीं। क्या भारत को अंग्रेजों ने राष्ट्र बनाया जैसा कि कुछ विद्वानों का मानना है। अगर भारत एक राष्ट्र था तो उसका स्वरूप क्या था, उस भारतीय राष्ट्रवाद का स्वतन्त्रता आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा आदि–आदि प्रश्नों पर बेनीपुरी ने अपने सहित्य में किस प्रकार विचार किया है इसका अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में किया गया है।

राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्रीय चेतना का क्रमशः विकास होता है। वह उर्वोन्मुखी है उसका आधार राष्ट्रीय एवं वर्गीय है। वह अस्पष्टता से स्पष्टता की ओर निरन्तर विकसित होता है। उसमें वैचारिक आयाम भी जुडते चले जाते हैं। बेनीपुरीजी एक राजनेता की तरह नहीं बल्कि एक साहित्यिक मनीषी की तरह इन प्रश्नों

से किस तरह रूबरू होते हैं, इसका गवेषणात्मक अध्ययन इस प्रबन्ध में किये जाने का प्रयास किया गया है।

राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में कौन–कौन से बाधक तत्व थे? साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नारी उत्पीडन, शोषित वंचित तबके का निरंकुश उत्पीडन हिन्दी प्रदेश में किन–किन रूपों में विद्यमान था, इसका प्रतिबिंबन उनके साहित्य में किस रूप में हुआ तथा सामंती शोषण की भयानकता में किस तरह श्रमजीवी जनता को निष्प्राण और निःसत्व कर रखा था, उसका चित्रण बेनीपुरीजी की रचनाओं में हुआ है, इसका विवेचन भी इस शोध प्रबन्ध में किया गया है।

निष्कर्ष

बेनीपुरीजी घोषित समाजवादी थे। नवोदित भारतीय जनगण की समस्याओं के निराकरण के लिए उन्होंने समाजवादी व्यवस्था के किस रूप को अंगीकार किया, मानवता की मुक्ति के लिए किन–किन विचारधाराओं के साथ उनकी सहमति रही, विश्वमानवता के कल्याण के लिए उन्हें कौन–सा मार्ग प्रीतिकर लगा, आदि समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने कौन सा ब्लू प्रिंट तैयार किया, इस सबका लेखा जोखा उनकी रचनाशीलता में खोजने का प्रयास भी किया गया है। आज जब मानवता विनाश के कगार पर खडी है, विश्व साम्राज्यवाद का आतंकवाद और उसके विरोध के नाम पर घातक साम्प्रदायिक आतंकवाद की गिरफ्त में सारी दुनिया आती जा रही है। ऐसे भीषण संक्रमण काल में मुझे बेनीपुरीजी का रास्ता ही प्रासंगिक लगता हैं।

संदर्भ

1. आधुनिक भारत– बिपिन चंद्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली, संस्करण– 2015
2. भारत में राष्ट्रीय आंदोलन– बिपिन चंद्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली।
3. रामवृक्ष बेनीपुरी (मोनेग्राफ)– रामवचन राय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
4. स्वाधीनता और समाजवाद– श्री रामबृक्ष बेनीपुरी, 2001, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
5. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि– ए.आर. देसाई, मैकमिलन इंडिया लि., नई दिल्ली, 1977